प्रियाप्रीतमबिलास ।

अपनी और अपने चचा ठाकुर गनेस
बख्स सिंह की निर्मित की हुई
कविताई को

ठाकुर महेश्वरबख्स सिंह तालुकेदार राम-
पुर मथुरा जिला सीतापुर ने रसिकजनों के
निमित्त बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक
भारतजीवन के इच्छानुसार शुद्धता-
पूर्वक प्रकाशित किया ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रीत हुआ ।

सन् १८९१ ई० ।

तृतीय बार १०००

प्रियाप्रीतमविलास ।

दोहा ।

रसिकराज राधारमन रासेश्वर रसदानि ।
रीति सहित रति रामपद दीजै सब सुखखानि ॥

सवैया ।

उर ग्राम अनूप सरूप महा जग छन्द विदेसिन नेक टिकैं । करुणारस पूरण कूप सरोज मनोज कुवायु जहां न भिकैं ॥ गनपाल निसा दिन भक्ति प्रकास हुलास रुमावलि वृत्त छिकैं । प्रिय प्रेम पुरी वह और अमान सुजान जहां नित जाय बिकैं ॥ २ ॥

कमलाकर नयन विसाल बनी परभा कर भास लखे तरसैं । मकराकृत कुण्डल श्रौन अनूप मनोहरता जेहि छ्वै सरसैं ॥ गनपाल सबै कुलकान विसार विलोकन को जिय त्यों हरसैं । रसदानि सदा मनमोहन की मुसकानि सुधाधर ज्यों बरसैं ॥ ३ ॥

गनपाल सिखावन कौन सुनै थिर आपुहि मे जिम होइ अगै । उर आनि छटा छवि नैन बिसाल यथा अलि कौलहि माँहि फँगै ॥ निसि बासर मौन सुनै मुरली कुल लाज मझार कबौं न पगै । धिग् ताहि सखी चित लेन बिचारि जो स्यामसरूप लखे न लगै ॥ ४ ॥

कब धौं मुरली सुर टेर सुनाय बलाय एकान्त मगै गसिहौ । तिरछी करि नैन कि सैन सुवेस बिलोकन मो तन ह्वै हसिहौ । गनपाल बिवेक बिहाय दई सुनि नेह सुधा पुछिहौ कसिहौ । घनस्याम प्रियाप्रिय प्राण समान कबै उर आनँद कै बसिहौ ॥ ५ ॥

मुख इन्दु प्रकास बिभासित पैठन नैन चकोरन को परिदे । चित चंचल ऐंचि चहूँदिसि सों सुखमा मद नाभि विषै धरि दे ॥ गनपाल गुनागर सागर पै मन मीन अधीन हिये हरिदे। छवि कान्ह किसोर को देखि अली कुल लाज निछावर को करि दे ॥ ६ ॥

पहिले तिरछी करि भौंहन सों अपनाय सबै बिधि नेह लगावत। मुसकानि मया सरसौ अतिही दरसौ छिनहीं छिन मोद वढ़ावत॥ गनपाल सचाह अचाह सी कै दिन रैन निजानँद मे तरसावत। अबलानि मो पायो दुखानि अपार मनोज के तायन ताहि सोहावत॥ ७॥

घनस्याम सरूप अनूप छटा तन पानिप पानि धसाइये ना। गनपाल मनोहर माल सुवेस सरोज से नैन नचाइये ना॥ हकनाहक लाल बेहाल करौ कुल लाज के साज दुराइये ना। सरसौ सजि मेह अछेह ज्यों त्यों करि नेह बिदेह सो ताइये ना॥ ८॥

अलकावलि फांस बिलासन भ्रू चल कुण्डल रीझ फँसी सी रहै। अधराधर बांसुरिया सरसै धुन मेघ सुधा बरसी सी रहै॥ इन भाइन में मति मेरी सदा गनपाल सनेह गँसी सी रहै। निसि बासर प्राणपियारी प्रभा सजनी चित मेरे बसी सी रहै॥ ९॥

कबहूं मुख की छबि पै अरुझै सुरझै जल वेग बहावो करैं। तन पानिप पै छन देत मनै कुल लाज सुबुद्धि भुलावो करैं॥ गनपाल सदा निज स्वारथ मो चित प्रेम नदी उमगावो करैं। सजनी तन भूप अनूप बनै दृग देखत रूप बिकावो करैं॥ १० ॥

लखि कोमल मंजु सरोज प्रभा मुख सेति सदा तरसोई करै। तन पानिप चन्द छटा दरसै सुख सिंधु हियो सरसोई करै॥ गनपाल सखी बिरहागिन सों जग लाज सबै झरसोई करै। मन चेत को देत सहेत तऊ दृग आनँद पै बरसोई करै॥ ११ ॥

सुधि आये मनोज दहै उर को तन को तनको पतरावो करै। चित श्रोन समीप बनो न टरै अपने हित की बतरावो करै॥ गनपाल त्यों नैन चले उत को हटकै उलटो सतरावो करै। तन पानिप सिंधु में पैरी अली मन बूड़त औ उतरावो करै॥ १२ ॥

सुनि नेह भरी बतियां हिय की मुख इन्दु सों या मग फेरते तौ । मन धारि दया प्रतिपालित जानि सुधानिधि बानि सो सेरते तौ ॥ गनपाल भ्रमी मग कुंजन धीर बिचारि दयानिधि टेरते तौ । कबहूं करि सूधे सरोज से नैन मया करि मो दिस हेरते तौ ॥ १३ ॥

कोकिल कूक अचूक लगै अरु भौंर गुंजार सुनावत गायरी । त्यों गनपाल समीर त्रिधा बहि आतुर ह्वै धरिये लग धायरी ॥ जारत आय मनोज तनै बिरहागिनहूं डरपावत आयरी । क्यों न जरै जरिबेई परो जो जरै सो मिलै तुरतै जरि जायरी ॥ १४ ॥

मुखचन्द चकोर को देखिवें को निस बासर डीठ धरोई रहै । तन पानिप पान को मीन बनो बिन ताँके भ्रवान परोई रहै ॥ गनपाल सखी सिख नेक सुनै न गहै निज टेक धरोई रहै । मुसकानि सुधारस को अलि ह्वै वलि मो मनमत्त अरोई रहै ॥ १५ ॥

छन भूलै भ्रमै उलटै पलटै सुर की धुनि देत दुखै पसुरी। निज अंग मे बेह करै तन मे कुल लाज लजै न रहै कसुरी॥ गनपाल हुलास बिलास चढ़ै निस बासर ध्यान धरै असुरी। मन बूड़त आनँद के नद मे बसुरी सुन नाहिं चलै बसु री॥ १६॥

अबहूं करि प्रीति सुनौ हिय धारि दयानिधि नेक जुड़ावो करो। मुरली धुनि प्राणपियारी पिया कबहूं मग कानन नावो करो॥ गनपाल न चाहिये ऐसी तुम्हैं नित चेत के हेत लगावो करो। अपनाय मिलाय बनाय हिये इतनो न भला तरसावो करो॥ १७॥

मिलि है यहि बात कही सबने नित ऐसही जीवन आस रही। गनपाल न काहू को मान्यो सचौ कछु योंही सही सुभ स्वास रही॥ करनी है उपाय ज्यों पावैं उन्है चलि बूझिये काहू सुबास रही। अब थोरी कथा सी दिखात सबै कब ह्वै है यथा पति पास रही॥ १८॥

पिया प्यारे सुनौ द्रुत कानन दै हमको तजि कै तुम पैहो कहा। कछु काज न लेत किते दुख हेत दयानिधि ह्वै यह देत चहा॥ जग बांह लै काटै न काहू कि क्यौं गनपाल भरोस तिहारो महा। प्रतिपालिये पालते आये जथा मुख मोरिये ना पति मेरी हहा ॥ १९ ॥

हे बलबीर बधौ अबलान दयानिधि ह्वै उर नेक न आनत । त्यौं गनपाल अहो सुखदाई रहौ दुख देत न नेकहु मानत॥ हौ दरसी सम वेद कहै दहिये कहिये कछु धाहि दैवानत । कैसे कृपाल कहावत लाल कृपा करिवो तो न नेकहू जानत ॥ २० ॥

मान सरूप करै न अली कुलकान हिये दिन चारि रहै है। त्यों गनपालन हिये सँभारि दयानिधि छोड़ि कै कासो निबैहै॥ नेह बिना यह देह कुखेह सी देखु बिचारि न और सिखैहै । जैहै य प्रोढ़ता जा दिना री कर मैं कर मीजिबोई रहि जैहै ॥ २१ ॥

आह रही मिलिबे की पिया घन आनँद सों उर छाय रहे छिन । चीत तजा मनि काम सबै सही नाहीं आराम घरी निसहूं दिन ॥ त्यों गनपाल ना कीजे यती कठिनाई दयानिधि देखो हिये किन । दीजे दिखाय छटा बर रूप वृथा तन बीतत जात तुमै बिन ॥ २२ ॥

कब तै चितयौ दुचिताय हिये बितताय भ्रमै त्यहि आसुहि घेर दे । सुनि लीजिये प्यारी कृपा करिकै उर धारि दया कछु मो तन हेरि दे ॥ बतबाद बिबाद चवाइन को चहुंओर वृथा अब ताहि निबेरि दे । गनपाल अरी असुरी बिलखात सुधाधर रूप सुधा मुख फेर दे ॥ २३ ॥

जग आनँदकन्द अहो नँदनन्द छटा छवि फन्द बझावो करौ । छन खञ्जन कै मद गञ्जन हार तिन्है कन नेह चुनावो करौ ॥ गनपाल सुपच्छ निमेषनि सो श्रम आनँद पै बरसावो करौ । कबहूं कबहूं उर धारि दया निज जानि न यों तरफावो करौ ॥ २४ ॥

सुचि रूप को आसव पान कै नित्त कबै बन खोरिन में भटकैगी। उर में अभिलाष सुनै बतियां मुरली सुर की धुनि कै खटकैगी॥ गनपाल छटा सुख नैन सदां जग लाज कुसाज कबै पटकैगी। कब धौं वह मूरति मोहनी सी मनमोहन को मन मो अटकैगी॥ २५॥

मुख इन्द प्रभा दरसाय हिये विष बेल की बीजन सों धरिगो। छवि जाल छटा बरनी न परे गनपाल जू चित्त तहां परिगो॥ अँग मोर लखि चहुंओर भटू मन ज्ञान विधान सबै हरिगो। असुरी तरसै पसुरी परसै बँसुरी सुरसै सुरसै करिगो॥ २६॥

सुरभी सुखमा पय कीन्हो सिँगार अमीरस मै दधि सार फबै। करता झखकेतु बिसाल बन्यो मथनी वुधि चारु बिचार सबै॥ गनपाल सुरी नरी आसुरी नारि मही बिरचीही बिसोखि कबै। धरो राधिका माखन रूप अपार सुधारस सों प्रगटाइ अबै॥ २७॥

घहराती घटा गनपाल लखौ छहराती छटा छवि ह्वै अतियां । लहराती लता लपटी लटकैं थहराती पपीहन की बतियां ॥ नहराती नदीन नदीन मनौ झहराती झरी दिनहूं रतियां । कहराती दरीन मै केकी लखौ हहराती बियोगिन की छतियां ॥ २८ ॥

राखो चहौ कुलकान हिये अरु चाखो चहो रस प्रेम को नैबो । भाखो चहौ हरिनाम निते पुनि चाखो चहो जग अंक न ऐबो ॥ त्यौं गन-पाल सयानी चहो रंगि चून निसा बिलगाय देखैबो । मूंदी न रैहै प्रियापति प्रीति ज्यों बीन बजाय चना को चबैवो ॥ २९ ॥

वेद पुरान प्रमाण पुरान हितू हित की सुनि मानि न लेहै । स्याम कसौटी कसै तन सोन नहीं बिरहानल तावन तैहै ॥ जो पै चहो सुख जीवन को गनपाल कहो लघु होतौ सिरैहै । जैहै य प्रौढ़ता जा दिना री करमै कर मीजिवोई रहि जैहै ॥ ३० ॥

मनहरन ।

सिशिर तुसार बन जलज उजार किये कि-
रिनि अपार जल निकर सुखालिये । दास गन
आय मच्छ कच्छन बिनास डारे बिहँग बिदारि
व्याधि व्याध निज ह्वालिये ॥ गनपाल गजन सु-
खानि नालहू न राखी मूल सूकरादि निज तु-
राडन उठा लिये । एहो स्याम जलद बलद अब-
लान जग पर उपकार मिसि मोहि निसि पा-
लिये ॥ ३१ ॥

सवैया ।

कबहूं थिर ह्वै जिय धीर धरै अपने बस में
दुख गोवती हैं । प्रिय जानि बियोग ससोच रहैं
गनपाल लखे जनु सोवती हैं ॥ टकलाय रहैं
मग ओर कहूं छन में हित को चित जोवती हैं।
अँखियान के संग फस्यो छबि में मन सो रह्यो
ये अब रोवती हैं ॥ ३२ ॥

नेह न कीजो कियो तौ बिदेशि न ताहुन
मैं सतनेही बराइयो । ताहू सो जो चित में न

टिकै तो बियोग की बाटन में न चराइयो ॥ त्यों गनपाल कह्यौ जो सोऊ बिनती इतनी हरि जू न बराइयो। मीचु मुठी में बनी सी रहै इतने को भला गरजी न कराइयो ॥ ३३ ॥

मुरली कर लै अधरारस दै निज नेहिन के गुन बागिये तौ। गनपाल जू देह के गेह में पैठि निसा भरि बैठि के जागिये तौ ॥ मधुरी मुसक्यान सुबानि घनी कछु कै हमसों मन पागिये तौ। सुचि प्रेम के पावक नेम को जारि गरे में मया करि लागिये तौ ॥ ३४ ॥

प्रिय प्रेम सुमेर तें ह्वै प्रगटो मुरली सुर सों घहरान चहै। सुखमा बर बाय तरंग महा अनुराग भरो गनपाल चहै ॥ जग साज कुसाज सुधा कुल लाज जवास यथा तरसान चहै। घनस्याम सरूप बढ़ै उर व्योम सखी रवि ज्ञान छपान चहै ॥ ३५ ॥

कहौ नेक न नेह की बातैं तऊ मनमे तऊ सो मतवारो फिरै। कुल लाज को साज कछू

न गनै दिन रैन मनो घतवारो फिरै ॥ वह पानिप पानि छकै गनपाल पिया सन मेलत वारो फिरै । अरी कूप में भांग परी सजनी जल पीवै सुई मतवारो फिरै ॥ ३६ ॥

मोहन मीत सनेह पयोध की मीन अधीन प्रवीन निबाहत । आनँद ताहि सुधारस पान में नेक न तासो वियोगहि गाहत ॥ त्यों गनपाल सुधा घट त्यागि हलाहल ऊधो सराहिबे साहत । नेह को त्याग बिराग सो राग क्यों लाख की लीक करो तुम चाहत ॥ ३७ ॥

मानत है कुलकानि अरी गुरु लोगन नेह के जाल समायहैं । त्यों गनपाल चवाइन को डर हीय भँडार मों पूरन लाय हैं ॥ प्रीति मनोहर मूरति कान्ह की ज्यों त्यों कै तौलौं हिये में छिपायहैं । घात में कौलौं छपै अँखिया सखी आखिर आम ह्वै हाट बिकायहैं ॥ ३८ ॥

सन्त असन्त न धीर धरै सु कहा अबलानि सिवासर अन्त की । अन्त की बोल सुनावत

कोकिल पीव कहा पपिहागन गन्त की ॥ गन्त की औध के घोस अली गनपाल सबै सरनागत तन्त की । तन्त की री रति कन्त असन्तन तापै परी बधिकाई बसन्त की ॥ ३९ ॥

मनहरन ।

देखि प्रभात जामें अलख लखात बात सुन्दर सुहात गुञ्ज भ्रमर मतावनो। सीतल समीर छिधा तीर सम वेधै वीर राखत न धीर धर द्विजवर गावनो ॥ अंघ्रिप समाज फूल फलन बिराज मञ्जु रञ्जित रमेश गनपाल सरसावनो । पतन समाज तन जतन लतन लखि विसद बसन्त मिस अतन जगावनो ॥ ४० ॥

सोहत सवाल वाला ग्वाल अनुराग भरे धार कर कमलन पिचकी विसाल को । बाजत नवीन ताल डफ ढोल गोल गोल वोलत अमोल वोल छोड़े लाज जाल को ॥ ऐसो सुख भयो नहीं ह्वै है न है तीनि लोक जैसो तोहिं आली री लखावत हौं हाल को । अतिही रसाल नंद

लाल को विसाल रूप टेढ़ो रेषा भाल लाल गरद गुलाल को ॥ ४१ ॥

सवैया ।

साजिहौं साज समाज सुदेस सुबेस करौ रँग केसर घोरी। त्यों गनपाल जू लाज समेत उड़ाय के बीर अबीरहि झोरी ॥ देषि हौ सो छबि प्रेम मई जेहि कीन्हो मनोज की ओज अथोरी। बाल हँसैं तो हँसै सजनी हौं गोपाल के साथ में खेलिहौं होरी ॥ ४२ ॥

जो तुहि बीर पियारी अहै कुल कानि सो री कलकानि है जायदे। त्यों गनपाल जू मेरे कहे एक तान बसन्त की मीठी सी गायदे ॥ जो न बन्यौ पिय प्यारे सो ये हठिकै सजनी अबहीं बिसराय दे। पैहै भटू नहिं ऐसो समय् नँदलाल के गाल गुलाल लगाय दे ॥ ४३ ॥

तूतौ बकै बहुतेरो अली गली लीजै भलौ कुलकानि न छूटै । त्यों गनपाल न भावै हमै विष सी बतियां हियरो धरि कूटै ॥ कौन सिखै

सिख तेरी भटू मनमें यह बानि गठी नहिं फूटै। घूटै जबै परमामृत विन्दु तबै जगजाल तै हाल मैं छूटै ॥ ४४ ॥

मनहरन ।

नाचै मन मोर लखे मोर को मकुट सीस देव सिर मोर मुख मोर छबि मोर सी । पीत पट छोर सुर मुरली को सोर अली अलक झ-कोर बरजोर धर कोर सी ॥ गनपाल भोर सु-खमा है सु अथोर भली चितवत चोर लसै ब-यस किसोर सी । कटि की मरोर रद अधर को जोर लखि येरी नैन कोर यह वोर कछु ओर सी ॥

कहूं नेह वोर कहूं वातें और तौर कहूं कीनै विष घोर सुधा वोर सुधरो करो। गनपाल थोर मुसकान मुख मोर रद चमक सिकोर बरजोर ही हरो करो ॥ जग सो बटोर मन मगन हि-लोर प्रेम सोच पोच मोच छवि छोर मो परो करो । येरे चितचोर प्रानचोर लाजचोर तोर कबौं मेरी ओर नैन कोर को करो करो ॥३६॥

मृदु मुसकाय नासा अधर चलाय सुर मु-
रली सुनाय लोक लाजहि रितै गयौ। सुठि बेष
धारि आछी काछनी सुधारि छवि छटा को प-
सारि दुख साजहीं बितै गयौ॥ गनपाल बानि
कल कुण्डल हलानि सुचि रस बरसानि सब
भांतिहि हितै गयौ। सैनन झकोर दयौ चैनन
अकोर अरी आजु मेरी ओर नैन कोर कै चितै
गयौ॥ ४७॥

सैन सो बुलाय हियौ आनँद फुलाय ग्यान
धीरज डुलाय ढिग आय कछु बोलौगे। हिया
सों लगाय युग नैन झपकाय गनपाल सरसाय
बरसाय रस रोलोगे। रूप मन धारि जग ला-
जहि बहारि निजमत मतवारि पतवारि करि
भोलोगे॥ जनमे को भाग भक्ति कञ्ज को पराग
राग पूरी प्रेम बाग अनुराग कब खोलौगे॥४८॥

गुरुलोग बस भोग मनमें छरस कृत अरस
परस बरबस कस छूटिबो। लोक लाज कस
चित आवे जबै अस घर बाहेर बन सनेह बन्धन

को टूटिबो ॥ सुख दुख जस जग त्यागै नस नस गनपाल सरबस मोह भाजन को फूटिबो । हाय परबस भयो जात है विरस बीर कैसे वह दरस सरससुख लूटिबो ॥ ४६ ॥

कैसे मुसकाय सरसाय हरसाय मन लीनो चित लाय अब वाको तरसाओ कित । छूटी कुलकानि ग्लानि उरमें न आनि कानि गुरुजन ज्ञान प्रेम रस हिये नावोहित ॥ गनपाल लाल ऐसी कीजे न बेहाल साल मैनवान जाल व्यथा करत विसेय चित । सुखन सो मारे मोद मञ्जुल सवारे थारे मेरे प्राणप्यारे अनियारे दृग फेरो इत ॥ ५० ॥

देखत सरूप मन आपनो अपन नाहि भयो गयो चैन कुल पद प्रेम पीन को । छोड़ि पितु मात भ्रात त्रात न लखानो कोऊ कीजिये कृपा कृपाल जग हित हीन को ॥ गनपाल न मिल्यो मिलावो प्रभुताई ऐसी आई सरनाय प्राण जैसे जल मीन को । अब न बनत अपनाइये अपन जानि कैसे प्राणप्यारे बिसरावत अधीन को ॥ ५१ ॥

सवैया ।

मुख सूधो किये उतको सजनी परतीति न संग करै डग मैं । मन नेक न धीर धरै लखि कै नयनानिहु पूरि भरै अँग मैं ॥ गनपाल त्यौं और न देखो कबौं दरसावन वारो नहीं संग मैं । सुभ प्रेम को मारग कैसे चलै कुलकानि के कांटे गड़ैं पग मैं ॥ ५२ ॥

कुलकानि को हाथ लै जाय मिलैं पुनि त्यागिबे को न कहूं लसिहैं । उर ग्राम सवारि है ता थल में गनपाल सुजानन को हसिहैं ॥ घनस्याम प्रकासि धरैं तहवां जग जाल सो चोरन जा गसिहैं । जेहि भावै जोई सोई बातैं करै हम प्रेम महीपति के बसि हैं ॥ ५३ ॥

निस बासर स्याम सरूप लखि पल लागत चित्त अचेत गहैं । प्रतिबाद करै तो वही गुन को बिमुखान ते नाहीं मिलाप चहैं ॥ गनपाल रसग्य जु ता रस को सखि ताहि सो नेक प्रमोद लहैं । सत नेक की बातैं सतानन में अस तान के जी में परै सो कहैं ॥ ५४ ॥

गुन राधिका स्याम के गान करैं जेहि चार पदारथ हाथ गहैं। निस बासर तौन बिलास में मोद बिचारि न केहूं वियोग चहैं॥ गन पाल तुमैं कहिवे है यही कारि है जो जोई जग सोई लहैं। सत नेह की बातैं सतानन में आस तान के जी में परै सो कहैं॥ ५५॥

गुरु लोगन को चित चेत यही निस बासर रूप छटा लखिबो। पुनि बैठे उठे चले सोए सदाहीं बिलास सुधारस को चखिबो॥ गनपाल सखी सिख जानो मनै मुरली सुर टेर सुनै हरखिबो। प्रिया प्राणपियारी प्रभा हरि की कुल-कानि को त्यागि हिये रखिबो॥ ५६॥

कितनी बिधि की सिखि दीन्ह भली न सुनी छबि सिंधु में जाय पिल्यो। कुलकानि को लाभ दये अतिसै तिन ओर सु देखि न नेक हिल्यो॥ गनपाल सदा मुख पङ्कज को अवलो-कत आनन्द मद्धि खिल्यो। हठि नैन के देखतहीं सजनी मन मेरो गोपाल में जाय मिल्यो॥५७॥

मनहरन ।

छहर छटानि बिज्जु छटा छति छाजै छोरि छरकि छबीली छबि छाजन मरीन मैं । झरत झराझर कै झरपि पवन झंझा झींगुर झनक झनकावत दरीन मैं ॥ गनपाल घुमड़ घटान घहरान घोर घमक घटावै देहु बिरही जरीन मैं । फुहरि फुहारि फरकावत मनोज उर फाँसि फट-कात मन लतिका हरीन मैं ॥ ५८ ॥

सवैया ।

पग बेग चलैं हठि कै उत को परखै छबि जा छन गात कहूं । गनपाल त्यों नैन रमे पहिले पल मान नहीं अलगात कहूं ॥ सब तौ लखिबे मह आवत है अंग एक पता न लगात कहूं । तन स्याम रसायन जाय मिल्यो मन पारा नहीं बिलगात कहूं ॥ ५९ ॥

प्रिय मूरति माधुरी साधु सुधाधर रूप प्रभा उर लावने है। गनपाल निसा दिन मै हित सो उनके गुन को गन गावने है ॥ इन आँखिन को

घन को सम कै मन-आनन्द पै बरसावनै है ।
जेहि भांति सों नेह बढ़ै सजनी तेहि भांति सो
बेगि बढ़ावनै है ॥ ६० ॥

नेक गोपालै विलोकै सबै धन जीवन मोहन
मोहनवारो । या पै चलैगी न ऐको अली चलौ
जैहै अँबै तो कहा निरधारो ॥ यों सब सों कहैं
गोपी सबै गनपाल सनेह न जात सँभारो ।
कासों कहौं चलौ देखो न री अरी लूटी सी
जात है देह बजारो ॥ ६१ ॥

छबि देखि हियौ उमगैबो सदा असुवाकी
सुखी दुख जामई है । गनपाल मनै पठवै हरि
पै न गनै तन हानि मुदा मई है ॥ कुल लाज
समाज के साजिबे को रखवार तो आजु लै रा-
मई है । अखियान सों पूछौ कहा सजनी तन
में इनको यहि कामई है ॥ ६२ ॥

मनहरन ।

सोई छल खाम सोई ललित ललाम ज्ञात
रिग यजु साम सुई सुपथ जमो रहै । सोई कुल

नाम सोई सन्त मन साम सोई अभिमत दाम सोई ईश्वर समो रहै ॥ सोई जस ताम सोई सर्व सुर ताम सोई गुनगन ताम गनपाल सिर मौर है । सोई सुखधाम सोई जग अभिराम जोई आठौ जाम राम सीताराम मो रमो रहै ॥

चाहै अभिराम धाम बाम पूरकाम मन जगत अराम बहु रामा मुद दाई को । विधि ईस सामा सन्त जामा सुखदामा चाहौ चाहौ बुध तामा सूरतामा एकताई को ॥ सुरगन तामा रिद्धि सिद्धि वृद्धि तामा चाहौ नृपति सभा मा सरबामा गुरताई को । गनप सदामा आठजाम जप नामा करौ रामाराम रामा रघुराई को ॥

भक्ति मन सर प्रेम अंकुर उदोत होत श्रद्धा बरनाल मकरन्द श्रुति माथ के । सत्य मूल्य पल्लव प्रवीनता पराग पुन्य केसर गुणानुवाद कौसलेस साथ के ॥ सौरभ तितिक्षा सुभ सुखमा सुसीलताई परमोपहार ब्रह्मा इन्द्र विष्णु माथ के । दुष्ट नैन अंज भक्ति मान दुख भंज गनपाल चित संज पदकांज विश्वनाथ के ॥ ६५ ॥

सवैया ।

बौरे रसाल रसाल महा बन गुंजत मत्त द्वि-रेफ अखारो । त्यों गनपाल पपीहन की धुनि सो सुनि प्रान न धीरज धारो ॥ वैरी मनोभव घात लगाये फिरै निसबासर बेगि पधारो । मन्त्र न होय सो तन्त्र करौ अहो कन्त लसन्त बसन्त सँभारो ॥ ६६ ॥

निसिबासर खोजत जात तुम्है गुरु लोगन सोग सो दूरि धरो । गनपाल महा धन धाम गन्यो न बन्यो मन नैन की सैन परो ॥ सब भांति विभांति ह्वै प्रेम रसी कछु जो रहो होय सो मोह हरो । प्रति भाल है ऐसो दयाल को है अरे नेक तौ लाल निहाल करौ ॥ ६७ ॥

भूलि है मत्त मतंग मनोज हिये बिरहानल पावक सूलि हैं । सूलि हैं फांस फसे रस के अबला किन पौन त्रिधा मन भूलि हैं ॥ भूलि है बेली घनी बन में गनपाल कदाचि पिया अनुकूलि हैं । कूलि है प्रान प्रवास एरी अरी बीति है आस पलास जो फूलि हैं ॥ ६८ ॥

ढोरिये रंग बहोर चहै पुनि चाहिए लीजिये सारी सरोटन । त्यों गनपाल जू चंक भरो सुख सों गहि पीजिये अंग रसोटन ॥ कंज कली सी लली सुकुमारि बिचारि पवारिवो कुंकुम खोटन । साल भयो हिय भाल सी बालहि लाल न देहु गुलाल की चोटन ॥ ६९ ॥

फूल सो बेली नवेली बनी नहिं सीयलै कोयलै कूक मचावै । हूक सी आय अचूक लगै पपिहा पिव पीव कै जीव कचावै॥ त्यों गनपाल गुलाल सो लाल गुलाल महा विरहागि तचावै । रागी विरागी भये वजि कै अनुरागिनी कैसे मनोज बचावै ॥ ७० ॥

देखति वा नट की छवि को कुल लाज समाज समेत गई है । लाल गुलाल के धूधर की लपटानि सनेह में बाटी जई है ॥ त्यों गनपाल जू सैन की चैन सो देह मनोज मनोज मई है । गोरी हँसौ कस भोरी बनी यह होरी नहीं चितचोरी भई है ॥ ७१ ॥

गुंज कै माते मधुव्रत ये बगरावत मौजें अ-
नंग बिसाल की । त्यों गनपाल जु कोयल कूक
अचूक लगावत बान निरास की ॥ फूले महा
कचनार अनाबिना रस देत बिगारि हुलास की।
आरी करै तन आरी सी लाय री लागी अँगारी
सी डारी पलास की ॥ ७२ ॥

तात न मात न भ्रात लखात सो त्यों गन-
पाल न कोऊ ठिहारिये । त्यागी महा कुल लाज
समाज भई मन औ क्रम दासी तिहारिये ॥ जात
वृथा तन जोबन नाथ अहो रसिकेश्वर याहि
सिहारिये । है निठुरान तिहारे न जोग त्यों क्यों
निठुरात बिहारी निहारिये ॥ ७३ ॥

रंग अबीर समीर के संग रँगी अँग अंग अ-
नंग सची है। लालन को गहि गालन में दिय
लाल गुलाल बिसाल खची है ॥ त्यों गनपाल
बिलोकत वा सुखमा जनु भानु प्रभास लची है
गोरी चलौ छल छोरि लखौ भलि राधिका स्याम
की होरी मची है ॥ ७४ ॥

सोहत रंग रँगे सुभ बास बिलास में मानौ प्रभास छई है। त्यों गनपाल हुलास सो दोऊ दुहून के गाल गुलाल दई है॥ प्रेम मई भे बिलोकनहार सो मारहु आनँद सिंधु मई है। गोरी लिये झिझकोरी करै चलु देखु री होरी में जोरी नई है॥ ७५॥

प्रेम को आसव पान किये सी घनी बन बेली डुलै रस भारन। नाचत कोकिल कीर कपोत भरे मन मैन बिदेह सँभारन॥ त्यों गन-पाल बियोगी दुखी लखि होती निरास पलास की डारन। हूक सी कोयल कूक चुभै अरी लूक लगी कचनार अनारन॥ ७६॥

सीतल बीर समीर सो तौ निस बासर होत है लूक की कारन। त्यों गनपाल ये कोयल कूक अचूक लगावत हूक अपारन॥ ऐसे मे ओज मनोज करै बिन मीत सभीत न देह सँभारन। धीर धरो कहा आली करौं लखो फूलि फरो कचनार अँगारन॥ ७७॥

किंसुक फूल उठावत सूल मिटावत आनँद मूल भगार से । सीत न चन्द अमन्द तपावत होत दिवा निसि दुष्यपगार से ॥ त्यों गनपाल मनोभव तीर समीर लगाव सुगन्ध बगार से । देखत बीर रहै नहिं धीर जिये कचनार विधूम अँगार से ॥ ७८ ॥

कैलिया ह्रूल छुरी दुख मूल त्रिसूल त्रिधा बन पौन मनौ है । त्यों गनपाल मधूव्रत की अबली सबली रजुलीम गनौ है ॥ सोगी बियोगी पसूगन पै भृकुटी कर मान कमान तनौ है । सन्त असन्त गनै न दै अन्त बसन्त मे काम कसाई बनौ है ॥ ७९ ॥

देखि न भूलै सुधाकर को यह पूरो निसाचर तोहि तचैगो । राग तजो अनुराग भरो पिक कोटिक मार की मार रचैगो ॥ त्यों गनपाल अरे मन तू गन पौन के धूंधुर माझ मचैगो । क्यों डरते करते न कछू कस सेमर ते मरते न बचैगो ॥ ८० ॥

झूंकि समीर गिरावत फूल मनो बहु भार अँगार भरै री। फूले महा कचनार अनार अ-पारन डारन आगि बरै री ॥ त्यों गनपाल अ-नंग भुअंग बिना ब्रजचन्द को धीर धरै री। त-न्त करौ कछु बन्त न बीर असन्त बसन्त पै गाज परै री ॥ ८१ ॥

आवति ह्वौ सिख देन सबै मन जानती मो-हि गँवार महा है। ताकि कहा कुल लाज स-माज लह्यौ रसविन्दु को जानि फहा है ॥ त्यों गनपाल करोरिन मैंन की सैन सी तापर सैन चहा है। प्रेम को तीर लगो नहिं बीर तौ का जनौ और की पीर कहा है ॥ ८२ ॥

प्रीत सो हीन कहै बतियां मति छीन क-हारी न आनँद भावत। सुन्दर नन्दकिसोर कि-सोर किसोरी तू कैसे नहीं उमगावत ॥ त्यों ग-नपाल अनादर सो कर कादर चादर जी ब-हलावत। मालिनी राग के बाग तुही तौ कहा अनुराग में दाग लगावत ॥ ८३ ॥

बिन देखि मनोज मई छबि को निस बासर नाथ न जात रहो । रसबादु सुभासुभ छोड़ो सबै मधुरी मुसकान पै कान चहो ॥ गनपाल सखीन की सीखौ तजी जगवास के जे उपहांस सहो । पतियां सुभ हाथ में नंदलला घतियां की भला बतियां न कहो ॥ ८४ ॥

आनँद चन्द को रूप अनूप अमन्द हिये मन माय रहा है । त्यों गनपाल बिलास को हांस न स्वाद सों और पै जात सहा है ॥ मोहन मोहन में अँग अंग अनंग लखि सरमाय महा है । नैन की सैन में जाय छले भले प्रेम के पन्थ में नेम कहा है ॥ ८५ ॥

भूलना ।

ऐसी कौन लगै नहिं मोहै सोभा सुखद माधुरी भटकै । ऐन चैन मन मैन जगावत रसिक गनप नहिं मानत हटकै ॥ भ्रू कमान मिजगान बान लगि लोटत मान नायका घटकै । छबिसागर गुणआगार लोचन श्री स्यामावर नागर नटकै ॥ ८६ ॥
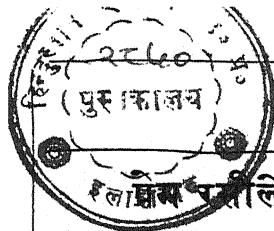
[illegible] गीले ढीले हीले मधुर रसिक मन खरके। कोटि मैंन सुख सैन एक छबि सोभा सीव सीलता घरके॥ गनप सखी मुद कुमद इन्दु वर कञ्ज खञ्ज मीनादिक सरके। करुना छमा दया मुख मुरली नैन चैनमें मुरलीधर के॥

मनहरन।

कैधों पिचकारी कैधों सोहै ब्रष्टि भारी कैधों राजत घटारी कै अबीर रंग भारी है। कैधों नृत नारी कैधों सम्पा चमकारी कैधों डफ ढोल तारी कैधों मेघ घोष धारी है॥ कैधों मोरझारी कूजि गनप बिहारी कैधों गावती धमारी सर सारी बेस टारी है। छीटै अरु नारी कैधों इन्दु बधू सारी रितुराज सुखकारी कैधों पावस पधारी है॥ ८८॥

झूलना।

तरफत नैन मैन मद माते उमगत थकत बकत रस नेही। सुधि बुधि भूलि लाज कुल सगरी डगरी प्रेम डगर जस नेही॥ गनप लाभ

कछु हानि गनत नहिं प्यार पुरी आखिर बस नेही। सुन्दर सुखद माधुरी मूरति अति व्याकुल बिन स्याम सनेही ॥ ८९ ॥

सवैया।

आवत है उर में सजनी रजनी दिन नैनन को रस पीजिये । वा मनमोहनी मूरति को गनपाल हिये बिच आसन दीजिये ॥ सीख सबै गुरु लोगन की कुल कान समेत न नेक सुनी-जिये । छोड़ि सबै भ्रम फन्दन को नँदनन्दन के पदवन्दन कीजिये ॥ ९० ॥

नैन निमेष न लावत है अवलोकत माधुरी मूरति सानन । त्यों गनपाल सुधा गुन सो बर-साय रही मुरली धुनि तानन ॥ फूलि झरे से महा मृदु बोल अमोल पियारी सुनावत कानन। ऐसे सँजोग में कीन्हो बियोग तो चातुरी तेरी कहा चतुरानन ॥ ९१ ॥

बड़ भागिनि सो परिकै निकरै औ जला-जल सीप में लानो चही । कबौं रोकि पिपी-

लिका धार सकै उमही तटिनी गति बेग वही ॥ गनपाल जु तन्त पै मेरु रहै जल भीति को न्यावहु वात कही । सत मारग प्रीति निबाहि सखी विन राम कृपा निबहै न सही ॥

फेक चुकी गुरु लोगन की सिख देखि चुकी कुलकानि बनी सब । रेखि चुकी जुथि रेखिबे को पुनि लेखि चुकी रही लेखि छनी टब । भेखि चुकी गनपाल जु भेख वा भेख मनोहर रूप सनी फब । लागि है लागि है स्याम के अङ्ग अहै अभिलाष यहै सजनी अब ॥ ९३ ॥

आजु प्रभात समय् घरतै जमुना तट को उठि जाति भई री । काह कहौं कछु जात कहो न गयो हियरो ठगि मोद मई री ॥ त्यों गनपाल नचावत नैन लजावत मैनहि सैन नई री। देखो गली में भली हरि मोरति आली छली कुलकानि गई री ॥ ९४ ॥

झूलना ।

उमगत प्रेम तरंग रंग अँग गावत रसिक-

राज गुन गुरली । त्यों गनपाल उमगि धुन अनहद विथकत सुर ललना सुर जुरली ॥ हे सखि लखि बिलास ब्रह्म उत्सव कोटि कला लखि लागति थुरली । बीना लीन अपार सितारन बाजत मधुर मधुर धुन मुरली ॥ ६५ ॥

सवैया ।

मोहनी मूरति पै अलकै सुभ कुण्डल हालन माधुरी चाल की । त्यों अधरा बर पै मुरली पट पीत हलान मनोहर माल की ॥ चाहत है निस बासरहू हिय में हठि सालनि नैन बिसाल की । नेह के जाल फँसाइये लाल गोपाल सों येती विनय गनपाल की ॥ ६६ ॥

कोहैं कहैं मोरवागन कूकि त्यों पोहैं अनन्द लता लहरान री । जोहैं वधू विधु की पतियारियां छोहैं ही बूंदरिया झहरान री ॥ गोहैं वलाकन की गनपाल जू खोहैं अनेक विधी थहरान री । मोहैं मनोज की माती मनै लखि सोहैं घटा में छटा छहरान री ॥ ६७ ॥

आये हुते फरमान मनोज लिये बिरहीन पै है अति नादर । सो गनपाल मिल्यो दुख हाल मिल्यो बर लाल महा परमादर ॥ बीर सँजोग को आयो समीर दियो बिचलाय चले भजि कादर । येकौ चली न अली इनकी फिरे फेरि बलाक की चादर बादर ॥ ९८ ॥

हरियारी मनोज मई दरसै लगि पौन त्रिधा अंग त्यों थहरैं । चहुंओर मयूर पै सोर करै सुख कारिन बूंदरिया फहरैं ॥ गनपाल नई लतिका लपटौ बिन प्रानप्रिया लगतो जहरैं । नभ फेरि पटा सी कटा करतो उठती हैं घटा में छटा लहरैं ॥ ९९ ॥

इत सोहै मनोहर मोर सखी उत मोरी अनंग की सोभा सनी । पट पीत इतै चुनरी उत मैं हितकारिनिया सखि जूथ घनी ॥ गनपाल बिलोकनहार ठगे सुर वारत भूषन प्रान मनी । बर दूलह श्रीब्रजराज बने दुलही बृषभान कुमारि बनी ॥ १०० ॥

मनहरन ।

कौल कलि ताके मञ्जु छाये मुक्त ताके गुन गन गनताके हेतु रिद्धि सिद्धि ताके हैं। पानिप पताके छोरदार छवि ताके शिर भूष कर ताके हेम रंग फबि ताके हैं ॥ तीन गुन ताके जाके एक रेख ताके नैन गनपाल ताके साके बाढ़े बल ताके हैं । प्रेम फल ताके भक्ति रस भलि ताके बोध बुधि बलि ताके पद मातु ललिता के हैं ॥ १०१ ॥

पाय सुखधाम अभिराम गुण ग्राम तन छोड़ि छल छाम बदनाम तजि काम झट। स्याम छवि काम बहु ठाम एक बार यत सत्य गनपाल भन चारि दस आठ षट ॥जानि आराम निसि द्यौस के जाम भजु लगत न दाम मन काम पूरत सु पट । राम श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्री-राम श्रीराम श्रीराम रट ॥ १०२ ॥

सवैया ।

डोलत है बन पौन त्रिधा लपटी लतिकानि

झुलावत फूलन। फूले गुलाल गुलाब अनारकली कचनार लगावत लूकन ॥ त्यों गनपाल बिना नँदलाल जरै बिरहानल ज्वाल की फूकन । कीजे कछू उपकार भटू यह काटत है तन कौ-लिया कूकन ॥ १०३ ॥

मनहरन ।

संग नन्दलाल के बिलास रस रास कीन्हे होती थी निहाल सोधौं अलख लखावैंगी। गरे भुज माल उर उर सो रसाल लायौ तामे गन-पाल कैसे सेल्ही लपटावैंगी ॥ नाम रूप लाल गुन गनै कुल लाज तजि जीहै तौन कौन सोह-मस्मि रट लावैंगी । ऊधो जू कृपाल भला ह्वै करि दयाल भाषो जियत खसम कैसे भसम र-मावैंगी ॥ १०४ ॥

सवैया ।

फिरों बावरी सांवरी सूरति पै अलकावली फाँस के फन्द रहौं । सुषमा सुख सिंधु तरंगन में गनपाल जू मानस वाक वहौं ॥ निरसंक ह्वै

सावन के डर के विरहानल में निस जाम दहौं। हिया घूटिहि घूंटि रहौं सिगरी खरी प्रेम बिथा की कथा न कहौं ॥ १०५ ॥

बासर रैन अलीगन मैं रसना गुन गान को गीततई रहै । त्यों गनपाल भरी छवि ज्वै अ-खियां असुवान सो रीततई रहै ॥ नेह नदी उमहै थिर ह्वै मन को मनहीं पर बीततई रहै। भूलौ भ्रमै भ्रमरी सी भरै मुख माधुरी को चित चीततई रहै ॥ १०६ ॥

दिन औध के सोऊ बितीत भये पुनि पाई न पीतम की पतियां। घहरानी अनोखी घटा नभ त्यों चपला चकचौंधत है अतियां ॥ गन-पाल मनोज मनोज करै डरपावति आपनी कै घतियां । सजनी अब कोऊ उपाव रचो दुख देती हैं सावन की रतियां ॥ १०७ ॥

मनहरन ।

उझकि झपकि चख चकृत चकोर सम काहु वै बिचार निज दुखहि हस्यौ करै। पूरब किये

जो पूर पूरन सुधा से बैन सौन तौन कौनहू न मारग टर्यौ करै ॥ गनपाल विविधि बिलास कृत कुञ्ज और बुधि बिटपावलि मनोरथ फर्यौ करै। नभ हिय विषम वियोग निस तामे मृदु मुख तारापति अवलोकन कर्यौ करै ॥ १०८ ॥

सान्ति के धरन चार मुक्ति के करन बर बारिज बरन गनपाल अवलम्बा के। सोच के हरन निज जन के टरन प्रभा फर के फरन कर कौतुकी प्रलम्बा के॥ साँसति तरन प्रेम भक्ति के भरन भव भय के छरन सुप्रकास निरालम्बा के। मंगलसरन दुखदूषनदरन मन असरन सरन चरन जगदम्बा के॥ १०९ ॥

प्रेम रस पूरे सर जल सो प्रकास भान रैन दिन सोभा सम चारु हासि नीके हैं। करुना दयाल अमल मकरन्द भक्ति जन मन अलि छवि रासि भासि नीके हैं। गनपाल नैन निरखैयन के सैन चैन बिसद सुखद दुख दोष नाशिनीके हैं। प्रफुलित दल नषवर भास कर कर ऐसे अरविन्दु पद विन्दवासिनीके हैं॥११०॥

नैन की कजाकी मंजु मुख की मजाकी बैन चैन फबिता की बिधुता की छबि मंद की। कुंडलहला की मनि गनन झलाकी दुति अति समला की चपला की रुचि बंद की॥ भृकुटी-चला की नख सिख अमला की गनपाल मति थाकी ताकी जो कोउ पसन्द की। रति पति ताकी रति रोम रोम ताकी भली देखु अलि बांकी ऐसी झांकी रामचन्द की॥ १११॥

सवैया।

प्रथमहिं नहिं नेकऊ बूझि परै सुख योग में आनि बियोग फरै। मन भाये मनोरथ सो उमथै चित चाह भरो गनपाल करै॥ उमही सुषमा सरसी चितये दुख रूप अचानक आनि अरै। बिनकाज अकाज करै सजनी यह लाज समाज पै गाज परै॥ ११२॥

कानन कानन ओर किये अधरा मुसकानन कान कसी है। त्यों गनपाल अमंद सो रूप अनूपम जोति कला बिकसी है॥ नैन में प्रीति

झरी झलकै बरबैन मनोहर ऐन रसी है। मोहि री तौ यह जानि परी या खरी मन मोहन प्रेम फँसी है॥ ११३ ॥

कुलसाज के साज को साजिबो ठीक यौ भाषि अनेकन लोभ दिये मैं । सखियान की सीखी सिखी सिखिई बिषई बहु नेमहु प्रेम लिये मैं॥ गनपाल जू बास बिलास चितौनि न राखत धीरज कोटि किये मैं। कछु सूझत बीर न और हमै यों अर्यो बलबीर को बीर हिये मैं॥

सिगरी जुरि आपुस में करि चाउ चवाउ कै क्यौं जरती बरती हैं । हकनाहक बैर बढ़ाय वृथा गनपाल कहा हमरो हरती हैं । जब आपनी लाज कै काजै तजै तब और की लाज कहा करती हैं । मन मोहन के मुख देखिबे को अरी आखैं हमारी निते अरती हैं ॥११५॥

मधुराई भरी मुसकान बिना असुवानि सो नैन ये रीततरी। चित बौरो बनो सो फिरै भट को छबि धामहिं सांवरे चीततरी॥ गनपाल या

कासों कहा कहिये अपने सब आनि कै जीत-
तरी। हमरी मन जानत है सजनी बिनु देखे
जथा दिन बीततरी ॥ ११६ ॥

कोकी रटी छबि को लखि कै दृग कोक
अनंदित धाय मिलैंगे। त्यों गनपाल मनोरथ
भौर रसाधि स्वरूप हिलै न हिलैंगे ॥ नेह मई
उदयाचल ते अनुरागि तमार करानि पिलैंगे।
रैन बियोग के संपुट कंज कबौं तौ सँजोग प्र-
भात खिलैंगे ॥ ११७ ॥

मनहरन।

छित में छबीली अलबेली बिजुरी की छटा
सघन घटाये घेरि घुमड़ि घने रहे। तैसी बग
पात या अनोखी स्याम ताई बीच गनपाल मोर
सोर सरस सने रहे ॥ दूतिका अनंग कैसी फ-
हरै फुहारी मन्द आनँद दुचन्द जोति जुगनू
जने रहे। वर बरषा मै मन हरषान प्यारे पिक
ऐसेऊ समै मैं आप वैसई बने रहे ॥ ११८ ॥

मन काम पूरन के हेति हौं सिधारी प्रात धाम मै न कोऊ आई द्वार लौं बिचारिये। जानिये न कौन घरहाई बगराई पीर संग में न और जासों दुख निरवारिये ॥ गनपाल टौलिये रसीलो करि नैन कोर बोली हरे आखिर निपट मनुहारिये । दरद निवारिये जु नन्द के कुमार नेकु कर गहि प्यारे मेरो कंटक निकारिये ॥ ११९ ॥

रूप सुधा सिंधु में धसायौ तनमन बीर पानिप लहर लहरावत सकोने की । माधुरी रसीली नैन सैन अंग अंग बेधी भृकुटी मरोर सुख मोर हार टोने की ॥ गनपाल सीष तू तौ सिषवत हित हेत तजि जो ठनी है आन बात नहिं होनें की । कहिये अनारी चाहै कुलटा सुना री हम धारी हियरा री प्यारी मूरति सलोने की ॥ १२० ॥

सवैया ।

रुचिकारी घटा बिजुरी त्यों जुरी अभिला-

खन लाखन भांति भरैं । मुरवा धुरवा लखि बोलत बोल अमोल फुही छिति छाइ भरैं ॥ गनपाल जु या अनुराग मई जो दुरो भयो रूप सो देखि परैं । चिरजीवहि पावस प्यारी प्रिया जो बियोग में आनि सँजोग करैं ॥ १२१ ॥

मधु सो मधुरो रस जा मुख को चित कै हित सो द्रुत फेरिये तौ । गनपाल जु मंजु मृनाल भुजा अनुराग मई गर गेरिये तौ ॥ सुचि प्रेम सुधा रस सो उमगो छन मौ मन मो मन मेरिये तौ । जिमि हेरि हस्यौ हिय सीरी चितौनि कृपा करि वैसई हेरिये तौ ॥ १२२ ॥

अंग प्रभा पट पीत को रंग रँगाई रहै पियरो पियरे मैं । सीरे बिलोचन सीरे बिलास मिलोई रहै सियरो सियरे मैं ॥ त्यों गनपाल रसो रस सो मिसो प्रेम भरो हियरो हियरे मैं । मैन मरोरनि जोर को जौलौ जुरोई रहै जियरो जियरे मैं ॥ १२३ ॥

ऐसो लटो फटो जानि अकासहि ये किय

ठीकहि डोभन डोभत । एक बराटिका के हित पाय तजे निज भावन सोभन सोभत । छोड़ते ये छल छन्द छके छनके हित क्यों मन छोभन छोभत । येतौ बड़ो करुना कर पाय कहा लघु लालची लोभन लोभत ॥ १२४ ॥

नेम के अंक कलंक भरी सुचि प्रेम अरी मति मो न मिलाइये । अंग अनंग के रंगन मैं कुल संग प्रसंगन सो न हिलाइये ॥ त्यौं गनपाल जू स्याम मई मन मोरचा जो तनकौ न छिलाइये । नेह नये छबि राग भरे द्दग अम्बुज को सहसा न खिलाइये ॥ १२५ ॥

ही में बनो नटसाल सदा रहै जी की दसा जियरो जरो जानत । नैनन की गति नैन लखै भलै सैनन बैनन को पहिचानत ॥ त्यौं गनपाल जू श्रोन सुधा दुख अंगन सो अँगही अँग छानत । आवै मनै न मिलै कबहूं यो बियोग बिथा की कथा अनुमानत ॥ १२६ ॥

चोखी छटान पटा चमकाय चितै चित सो

चित चेत के चाहक । जुगुनू जोति जमात ज-
माय कियो जग जेरेक भेक सलाहक ॥ त्यों
गनपाल मयूर कै सोर भये वर जोर री प्रानन
गाहक । बाल भली अबला अनुमान चढ़े बल
बृन्द बनाय बलाहक ॥ १२७ ॥

मनहरन ।

छिति छहरारी बूँदरीन की कतारी हरी
हरत हमेस हठि हरष हटारीये । मोर सोर कारी
जोति जुगुनू पसारी भेक टेक येक धारी भारी
काम के बटारी ये ॥ गनपाल वारी कछु करु
हितकारी प्यारी नतरु विशेष सेष होत बटपा-
री ये । उमड़ै घटारी छूटी छहरै छटारी न्यारी
अबला अटारी मारि मरिहै कटारीये ॥ १२८ ॥

नीर ह्वै वीर न मान जू तीर गये नद ना-
रन की नहरानमै । मौज मनोज लता मति
प्रीति फरी फर फूहिन की फहरानमै ॥ त्यों ग-
नपाल चितै चपला चित चेत घलोई घटा घ-
हरान मै । मानो मनोहर मंजु मरो रमतो मन
मोरन की कहरान मै ॥ १२९ ॥

भूमि हरियारी इन्दु वधू की तयारी लोनी लता लहरारी छवि जमुना तटारी पै। झिल्ली झनकारी पौन प्राची लहरारी मोर सोर बन-कारी बक पंगति ठटारी पै॥ कोयल अन्यारी कूकि चित्त उमगारी गनपाल सुखकारी प्यारी चातक रटारी पै। उमड़ै घटारी दुरि दमकै छटारी तैसे करत कटारी ठाढ़े जुगल अटारी पै॥

कर बर जोरे मुख मोरे कुल लाज साज चलत चितौन चित चोर दुहु वोर की। तन पर सीले मन मौजन रसीले ढीले अद्‌भुत गति रति पति बर जोर की॥ सुचि रुचिकारी गन-पाल हितकारी भारी सुख प्रगटीन भृकुटीनन मरोर की। ढिग मै नवेली यासो अति तलबेली ऐसी सुख अलबेली झांकी जुगलकिसोर की॥

सवैया।

मन्द मनोज में चोज भरी सुनिये मधुरी धुनि मोर घटान की। त्यौं गनपाल लसी तरु तै चित चेतिये लोनी लता लपटान की॥ का-

री मिली हरियारी मनै उमगावत मंजुल कुञ्ज लटान की । मानौ न मानौ मिलौ न मिलौ पै लखौ छिति छ्वै छहरान छटान की ॥१३२॥

भूलना ।

निश्चल बुधि पटुली सरस रीति सुटि, स्वास डोरि अनुकूले मै । पुलकावलि तरुवर लताबेलि, सरधा सरजू सरकूले मै ॥ मन बन प्रमोद घन घटा प्रेम, बरसाय फुही हिय फूले मै । गनपाल भुलावो रामलाल, तन अवध नगर के भूले मै ॥

सवैया ।

कुल लाज सखीन की सीख सखी निरखि सुषमा सुख जानत ना । वह सौरी चितौनि के चोखी अनीसहि लेत पै वेद बखानत ना ॥ गनपाल जू त्यों परलोक कथा को विथा गुनि चित्त प्रमानत ना । चित सो हित सो मति सो हरि रूप सनेह मई मन मानत ना ॥ १३४ ॥

मनहरन ।

नाम री निसाकर बिसाकर निकर बार शिव

सीस बैठि नेक दया उर धारै ना । उदै दुख हेत जाको मित्र सो मलीन होत दोषाकर कुटिल कलङ्कित बिचारै ना ॥ गनपाल त्यों ही सुधा धाम नाम पायौ बेस बाम रूप बामै नेक सुख अनुसारै ना । प्यारे के बियोग को सुरूप निस कर याते राहु मुख मेलि याहि बहुर निकारै ना ॥ १३५ ॥

बिपत बिदारिबे को भव दुख दारिबे को नरक निवारिबे को समरथ आठौ जाम । सत सुख सारिबे को मोच्छ अनुसारिबे को सुजस पसारिबे को गनपाल मोद धाम ॥ भक्ति मुक्ति धारिबे को प्रनत उबारिबे को जनम सुधारिबे को पूरक अखिल काम । सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम ॥ १३६ ॥

सवैया ।

प्रीति किये अनरीत रचौं परतीत को पैंडो न भूलिहूं मानौ । रूप अरूप के भाव में भूक

रहै उर खार औ मीठ समानौ ॥ नेहिन की चरचा मनपाल भये हठिकै हठ आपनै ठानौ । प्रेम कथा को नथानही तीर तौ कैसे बियोग बिथान को जानौ ॥ १३८ ॥

कुण्डलिया ।

जातो जन मन काम सब राम राम भजु राम।
राम राम कहु राम कहु राम राम कहु राम ॥
राम राम कहु राम राम रामै रटु भाई ।
रामै जग रम मान मुक्ति रामहि ररि गाई ॥
रामै गाइ सदैव साधु पुरवै मन राता ।
धरु रसिकेस बिचारि हिये याही मति जातो ॥

मनहरन ।

माया मोह जनित मनोज चोज दूरि कर भूरि परिपूरि प्रेम आनँद जगाय हौं । सुषमा दया छमा पतित पावनादि गुन सुमन समाय गाय गाय उमगाय हौं ॥ यही सुख चारि को महेश्वर बिचारि फल जो पै बरजोर करुना की कोर पाय हौं । कारनि सुभाग सम नास दुरभाग भाग मुरपद पीठ की पराग नैन लायहौं ॥ १४० ॥

बिमल बिबेक मानसर उपजाई मूल नाल निगमागम बिचारही सँभारिये। लसत बिराग अंग कमली बिमल दल प्रेम सौ रमित सुठि सोभित निहारिये॥ चतुर पवर गभगति मुक्ति रस बेस जोग भोग कर्णिका महेश्वर बिचारिये। पावन पतित सुखदायक दयाल ऐसे गुरु पद-पङ्कज पराग पर वारिये॥ १४१ ॥

दोहा।

वेद सार सत मत सुथल, उपजत भरि अनुराग।
कतमनअलिकलपतफिरत, असगहुपदुमपराग॥

मनहरन।

त्याग कोह काम मोह लोभ फरफन्द फन्द चाखै कर निकर निकर निजानन्द को। हरत अनेक मालवारे तौ निहारै नेक पीवै क्यौं न सुधारस रसिक पसन्द को॥ मुद जुत कुमुद सुरेस औ महेश्वरादि तेरो सब भाँति साध साधकर बृन्द को। मानै मति मोर जनि दुरै चहुँओर अरी हेरि चित चोर तू चकोर रामचन्द को॥१४२॥

दोहा ।

काम क्रोध लोभादि धन, कत ताकत चहुंओर।
रामचन्द मुखचन्द को, हो चकोर चितचोर ॥

सवैया ।

जब ते छिति छोर लौं सोर सुन्यौ छवि कोर कटाछन के उर दाग मै। रसिकेस सदा रस के रसिया रस राखि रसाइये आकर भाग मै॥ अब तौ सुठि मूरति हीय सँभारि महेश्वर कीन्हो सबै दुख त्याग मै। निस बासर प्रीति समेत हरे मन को पट रागत है अनुराग मै ॥१४५॥

दोहा ।

गुरुपदकमलपरागरुचि, है जेहिअलिमनमांहि।
तिनकेसुखसम्पतिसदा, दिनप्रतिअतिअधिकांहि॥

सवैया ।

सुनिये मन लालची लालच मै अपने मनकी दिन रैन करै। कहुँ सीख न मानत मेरी कबौं विषया सतुषार मै जाय गरै॥ हितकारक जो बिन कारन को जस पुंज पताकन को फहरै।

परमेस जू को तू महेस कहाय वृथा भवजालन मैं भभरै ॥ १४७ ॥

सोई सदां भवसागर सेतु अपार अनाथन सोक बिसोकत । जोई अधीन के पातक पारि महा जमजातना ते हठि रोकत ॥ जोई रहै उमगी हिय मांहि निसा दिन हेरत दीनन को कत । सोई महेश्वर कोर कृपा को हिये निस बासर में अवलोकत ॥ १४८ ॥

तनको फल देस महेश्वर जू मन मूरति बेस बसीही रहै । दुति अंगन की दरसीली दसा दृग दीनन में दरसीही रहै ॥ श्रुति सार सुधाकर की करसी सुचि कीरति श्रौन लसीही रहै। रसराज रसायन को रसिया रसना रस राम रसीही रहै ॥ १४९ ॥

घोर घटान छटा छहराइ घने तम में जुगनून की चालो । भेकिन की धुनि औरई तौर भई रुचि कोकिन की गति मालो ॥ त्योंही महेश्वर कोकिल को स्वर चैन में मङ्गल रैन खु-

साली । पावती जो पिय प्यारो अरी करतो न तौ पावस येतो कुचाली ॥ १५० ॥

आये सुभाय कहूं घनस्याम घरे घरहाई घनीन नवीनता । साल से दीठि सबाल चितै दुरि बैठी भले मुरझाइ छबीनता ॥ आदर सादर में मन लाय महेश्वर सैनन तै न कबीनता। ज्वै सर सौ मुख आरसी में छलो कीन्ही भली अली प्यारी प्रवीनता ॥ १५१ ॥

यहि भाँति सों सुन्दर रूप बन्यो जेहि नाहि बिचार बिचारि सकै । सुषमा कर रूप महेश्वर जू अवलोकन माहि त्रिलोक थकै ॥ उपमान सकेलि रचे जितने अनुमान प्रमान न एक सकै। तजि के रचना सुघरापन की विधना प्रिय आनन ओर तकै ॥ १५२ ॥

सुठि कञ्चन की लतिका पर चन्द लसै अरबिन्द विकासित ह्वै । तेहि ऊपर कीर है खञ्ज लसैं बर काम कमान विराजित ब्वै ॥ अवली अलि वृन्दन के मघ मै गन तार महेश्वर भा-

सित ज्वै। अवलोकिये आनन्दकान्द अवै रचना विधि माहि अनूपम ब्वै ॥ १५३ ॥

लालन लाल उनीदिये कोर नहीं दख च-न्दन भाल दिये को। अञ्जन रेख कपोलन पै न अहै नट साल सनेह किये को॥ त्यौंही महे-श्वर तीरथ तीन के बेनो तद्यौनन छाप लिये को। मोद उन्है सरसावो भलै तरसावो न जू नित मेरे हिये को ॥ १५४ ॥

कुल लाज मनोहरता की सखी सिख देती सबै हित हैंती सही। पर प्रीति की रीति अ-नीति महा जेहि भाँति सो नीतिही जात बही॥ जग जान महेश्वर सोई भलै मन मौनता धा-रिवो बैस यही । हिया नेह बिथाही अथाही भई कहिये री कहा कहि जात नहीं ॥१५५॥

दूनी प्रभा छनही छन देखि रही चकिसी मति रीति अली की। त्यौंही महेश्वर भौंह म-रोरनि सो छलिगे मति कान्ह छली की॥ फैली अनूप कला कुच दन्त दवा छबि कञ्जन कुन्द

कली की। चन्द की जोति मलीन भई मुख-
चन्द की जोति बिलोकि लली की ॥ १५६ ॥

मनहरन।

गनपाल हाल चाल विमल विसाल बानि
राजत अमल तल कमल पदन के। उर गुंज-
हार बनमाल वारापार बनी सुषमा अपार रूप
सागर हृदन के ॥ सिखे पख मुकुट लकुट कर
कञ्चन की पीत पट लपट छटान के कदन के।
जग के छदन मुसकान भैं रदन सोहैं छबि के
सदन मन मोहन मदन के ॥ १५७ ॥

मालैं उर हालैं मनमोहैं छबि जालैं बन-
मालैं औ तमालैं उपमा लै न सकत हैं। भालैं
सम सालैं नैन बांके की विसालैं हियआलैं गड़ि
हालैं बरमालै चसकत हैं ॥ सुख गनपालै लखे
देत एक ख्यालैं दुख गन करि फालैं बंसिवाले
बसकत हैं। कैसे करौं आलैं काहू चालैं न संभालैं
घरे मोरपखवालैं मतवालैं कसकत हैं ॥ १५८ ॥

सवैया।

कटि काछनि पीत पटी सरसै बरसै सुषमा

मन को बसकै। अधरानन चन्द दिपै रद त्यौं रतिनाथ लखै उलटो चसकै ॥ गनपाल अरी चित ठीक दे आप तजै जगजालन को असकै। जेहि अंग त्रिभंग मनोहर सैन सुबैन के बैन हिये कसकै ॥ १५९ ॥

मुरली धुनि कानन मैं न परी अपनै बसते नवसीसी फरी। तिरभंग गुनागर नागर कै तिरछे दृग जैन गसीसी हरी ॥ गनपाल अजौ न लख्यौ कबहूं नख ते सिख लौं संग सीसी सरी। नहि नेह सो बेह भये उरमै सिगरी चित क्यों न हँसीसी करी ॥ १६० ॥

हौं जब आवत भावत प्रान हियौ सुनि आनँद सो उमगाइ हौं। अन्तर बाहिर सों सनिकै जल आनँद नैनन माझ बहाइ हौं ॥ बारहि बार छटा लखिकै गनपाल वियौग सबै बिसराइ हौं। पाय हौं ब्रह्महूं सो सुख देस जबै हिय लाय बनाय मिलाइ हौं ॥ १६१ ॥

कुलकानि सुबानि सुनी सिगरी उर धीरज

नेक धिरात नहीं । मृदु मूरति सांवरो बावरी
कै चलिगे कितहू सो सुझात नहीं ॥ गनपाल
कहै तु मिलावन आनि सो मो मन मैतो वि-
सात नहीं । सिख तेरो है सीतल नीर सो पै
विरहागि हिये की बुझात नहीं ॥ १६२ ॥

बस एक ह्वै प्राण कुरंग तजै बनभृङ्ग कुगन्ध
के फङ्ग परे । गनपाल त्यों मत्तमतंग महा गहि
एकहि टेक मनेक हरे ॥ तन त्यागै पतंग सुरूप
को लै जल मीन अधीन प्रवीन जरे । बस पांच
जहां प्रिय प्राण अधार तहां लखतं चित जात
गरे ॥ १६३ ॥

प्रिय मूरति माधुरी देखिवे को निसि बासर
नैन रसाने रहैं । उर लै छवि आनँद आंसुन
सो घन सावन से बरसाने रहैं ॥ गनपाल जू
राम रच्यौ धौं कहा कुन देखिबे को घरसाने
रहैं । प्रिय प्यारे को रूप लखैं नितहीं पुनि पे-
खिबे को तरसाने रहैं ॥ १६४ ॥

उर चाह रही दिन रैन हमे सजनी कबहूं

पिय आवहिंगे । तन जोबन भूर अनूप महा धन रूप छटा दरसावहिंगे ॥ पद कञ्ज बिनिन्दिक चन्द प्रभा नख पानि प्रछ्र परसावहिंगे । इन नैनन आनँद के रस सों गनपाल कहूँ बरसावहिंगे ॥ १६५ ॥

आये अबै सजनी ढिग स्याम बिलास सो बैन कहे हित सानि कै । त्यों गनपाल न हेत सो बोली चलायौ न बात कछू रसखानि कै ॥ मान पै गाज परै जेहि सो हठि कीनो वियोग सँजोगम जानि कै । कीजे कहा अरी सूझै नहीं बलि बेगि मिलाउ हमै हरि आनि कै ॥ १६६ ॥

कछु लेते तौ कानि हमारी पिया कुल औ कुल लाज को त्यागो जिनै । तुम मै निसि बासर ध्यान धर्‌यो न लख्यो पथ और कुगाथ किनै ॥ लहरैं सी उठैं बिरहागिनि की गनपाल सुधाधर स्याम बिनै । निज नेह सो पूरि मजाचक कै अब जांचक ऐसी बनायौ तिनै ॥

तजि मंगलमै करुना रसमै जनमै गृह पास

कै बैठी दई। गनपाल अजौ तजु मोह बिकार
तेही बस ह्वै चित कैसी ठई ॥ सखि आवै जु
चित्त चलै पिय देख करैंगे कृपा फिरि वैसी नई।
धिक् है कुल औ कुल लाज अरी जिनके फंग मै
परि ऐसी भई ॥

ऊधो सुनो बुरो मानो नहीं हरि सांचहु
कावरी रंगमे रातै। ताही सो मोको पठायो है
योग वियोग तै तौहु कह्यो सोइ बातै ॥ राज
सभा गनपाल सु राज तजु सत्संगति ह्वांकी
बतातै। सांची करी अरी बातै हरी लखौ ढांष
मो तीनि सदा सुचि पातै ॥

दोहा।

निज नेही वेही हिये, तिनके चित हित हेत।
लिखे कछुक गनपाल पद, श्रीरसिकेस निकेत॥